शिक्षा एवं संस्कृति

■ डॉ. हरिशंकर सिंह ■ डॉ. विवेक भार्गव

अनुक्रमणिका

भाग-1
दर्शन एवं शिक्षा

1. प्राचीन भारतीय शिक्षा-दर्शन में गुरु का महत्व
डॉ. विशाल सूद 3

2. तस्मै श्री गुरवे नमः
डॉ. श्याम लाल 7

3. स्वामी विवेकानन्द के चिन्तन की वर्तमान शिक्षा में सार्थकता
डॉ. मोहिनी तिवारी एवं डा. विवेक भार्गव 11

4. आचार्य श्रीराम शर्मा के शैक्षिक विचारों की वर्तमान में प्रांसगिकता
डॉ. बृजेश कुमार शर्मा एवं डॉ. मुनीशा शर्मा 18

5. डा. भीमराव अम्बेडकर का शैक्षिक दर्शन
राजश्री 25

भाग-2
सांस्कृतिक परिवेश एवं शिक्षा

6. सामाजिक परम्पराओं में उत्तर प्रदेश का लोकगीत
डॉ. लवली शर्मा एवं डा. महेश भार्गव 33

7. 'असम के लोक जीवन में बिहू'
शुभदा पांडेय 42

8. दूरदर्शन कार्यक्रमों का मूल्यों के विकास में प्रभाव
डॉ. अजीत कुमार शंखधार 45

9. प्लास्टिक प्रदूषण का सांस्कृतिक परिवेश पर प्रभाव
डॉ. मधुरिमा सिंह एवं डा. ऋतु अग्रवाल 54

10. बाल साहित्य एवं संस्कृति
डॉ. हरिशंकर सिंह 66

शिक्षा एवं संस्कृति
(ISBN : 978-93-80375-60-1)
सम्पादित द्वारा हरिशंकर सिंह तथा विवेक भार्गव
आगरा, राखी प्रकाशन, 2012 (पृष्ठ 3-6)

1

प्राचीन भारतीय शिक्षा-दर्शन में गुरु का महत्व

डॉ. विशाल सूद

जीवन-दर्शन और शिक्षा-दर्शन के मध्य वैषम्य की कोई कल्पना नहीं की जा सकती है। वे एक-दूसरे के पूरक हैं और एक-दूसरे को प्रभावित भी करते हैं। जीवन-दर्शन की दृष्टि से प्राचीन भारतीय दर्शन के विभिन्न कालों के बीच गहरी रेखायें नहीं खींची जा सकती हैं। प्राचीन भारत की संस्कृति शाश्वत और सतत् रही है, अविभाज्य रही है। विद्वानों ने वैदिक संस्कृति से महाकाव्य (रामायण और महाभारत) कालीन संस्कृति में प्राथक्य स्थापित करने के प्रयत्न किये हैं; किन्तु बाद वाले काल में भी वैदिक संस्कृति और जीवन शैली का स्पष्ट प्रभाव है; साम्य भी है। वैदिक जीवन शैली महाकाव्यकालीन जीवन शैली में प्राचुर्य है। प्राचीन भारतीय जीवन-दर्शन धर्ममय था। जीवन के सभी कार्यकलाप धर्म से ओत-प्रोत थे, धर्म से नियंत्रित थे। धर्म द्वारा धर्म के लिए और धर्ममय जीवन शैली प्राचीन भारत की विशेषता थी। वर्तमान जीवन में राजनीति का प्रभुत्व है। धर्म, समाज, अर्थ आदि सभी में राजनीति का प्रवेश है। सभी पर राजनीति हावी है। प्राचीन युग की प्रधानता होने से राजनीति में हिंसा और शत्रुता, द्वेष और ईर्ष्या, परिग्रह और स्वार्थ का बहुल्य न होकर, प्रेम, सदाचार त्याग और अपरिग्रह महत्वपूर्ण थे। उदात्त भावनायें बलवती थीं। दिव्य सिद्धान्त जीवन के मार्गदर्शक थे। सामाजिक व्यवस्था में व्यक्ति प्रधान नहीं था, अपितु वह परिवार और समाज के लिए व्यक्तिगत स्वार्थ का त्याग करने को तत्पर था। उदात्त वृत्ति की सीमा सम्पूर्ण वसुधा थी। जीवन का आदर्श 'वसुधैवकुटुम्बकम्' था। जीवन का उद्देश्य धर्म था। धर्ममय जीवन भौतिक उपलब्धियों से श्रेष्ठ माना जाता था।

प्राचीन भारत का शिक्षा-दर्शन भी धर्म से ही प्रभावित था। शिक्षा का उद्देश्य धर्माचरण की वृत्ति जाग्रत करना था। शिक्षा, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के लिए

सहायक प्रोफेसर (शिक्षा) अंतरराष्ट्रीय दूरवर्ती शिक्षा व मुक्त अध्ययन केंद्र, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला।